आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022

Received: 10/09/2022; Accepted: 13/09/2022; Published: 24/09/2022

भारतेन्दु हरिश्चंद्र की रचनाओं में राष्ट्रभक्ति -भावना

- डॉ. नागरत्ना राव

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

मंगलूर विश्वविद्यालय

डॉ. नागरत्ना राव,भारतेन्दु हरिश्चंद्र की रचनाओं में राष्ट्रभक्ति -भावना,आखर हिंदी पत्रिका,खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022,(193-197)

"भारतीयता के मुखबिर ,राष्ट्रीयता के पक्षधर।

हिंदी साहित्याकाश के इंदु -भारतेन्दु कविवर। "

समाजसुधार और राष्ट्र -प्रेम की भावना के साथ अवतरित हुए भारतेंदुजी ने अपनी लेखनी से भारतीयों में एक नवीन सोच का संचरण किया। उन्होंने रूढ़िवादी परम्पराओं की बेड़ियों में बंधे समाज में आधुनिक चेतना का प्रसार किया। विदेशी सामंती जकड़न में फंसे भारतीयों को उन्होंने अपने तमाम भेदभावों से ऊपर उठकर एक " भारतीय " के रूप में संगठित होने की प्रेरणा दी। उनकी रचनाओं में राष्ट्रभक्ति के दो रूप दृष्टिगोचर होते हैं -

१) राष्ट्र के प्रति गौरव की भावना

२) राष्ट्र के प्रत्येक तत्व से प्रेम करना

भारतेंदुजी ने अपने पांच वर्ष की आयु में ही एक दोहा लिखकर अपने माता-पिता से "सुकवि" बनने का आशीर्वाद लेकर सचमुच एक उत्कृष्ट बहुमुखी रचनाकार बने। फिर अट्ठारह वर्ष की अवस्था से लगातार लिखते रहे। इनकी साहित्य सेवा सराहनीय है जिसके अंतर्गत कविता,नाटक ,निबंध आदि सम्मिलित हैं। इनके माध्यम से उन्होंने देश के लोगों मेंजागरूकता लाने हेतु पत्रिकाएं भी चलायीं- हरिश्चंद्र मैगज़ीन,कविवचनसुधा ,हरिश्चंद्र चन्द्रिका आदि। वे देश के लोगों में एकता,समता ,भाईचारे की भावना का संचार करने में सक्षम हुए। उन्होंने दीन - दुखियों की भी सेवा की। युग की आवश्यकता के अनुसार उन्होंने साहित्य रचा। वे अपने समय की आवश्यकता को समझते थे और उसी के अनुरूप उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना का संचार किया। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीजी, भारतेन्दु की रचना विधि को लेकर सही टिप्पणी देते हैं -

"भारतेंदुजी ने क्रांतिकारी हथौड़े से काम नहीं लिया। उन्होंने तो मृदु संशोधक, निपुण वैद्य की भांति रोगी की स्थिति का ठीक - ठाक जानकारी प्राप्त कर उसकी रुचि के अनुसार

उचित पथ्य की व्यवस्था की और यह उनकी अपनी व्यवस्था है। "1 इन्होने भारत के इतिहास और संस्कृति के सकारात्मक घटकों का हवाला देते हुए पहले लोगों के मन में देश के प्रति गौरव की भावना जागृत किया और उनमें राष्ट्र प्रेम जगाया। परिणामस्वरूप उनका लेखन तत्कालीन समाज के लिए एक सच्चा मार्गदर्शक बना। यही उनकी देश -सेवा है। भारतेंदुजी की रचनाओं में राष्ट्रभक्ति के इन आयामों को देखा जा सकता है - राष्ट्र के प्रति असीम गौरव की भावना -

एक व्यक्ति की अस्मिता उसके राष्ट्र के अस्तित्व से जुडी है। राष्ट्र है तो हम हैं। हमसे राष्ट्र नहीं। इसी कारण प्रत्येक व्यक्ति को अपने राष्ट्र के प्रति असीम गौरव की भावना होनी चाहिए। जब तक व्यक्ति अपने राष्ट्र को नहीं पहचानेगा ,उसे नहीं जानेगा तब तक उसमें अपने देश के प्रति गौरव की भावना नहीं आ सकती। राष्ट्र - प्रेम हर व्यक्ति की मूलभूत भावना है। राष्ट्र -प्रेम का मतलब केवल झंडा उठाकर संघर्ष करना या सैनिक बनकर सीमा पर लड़ना नहीं है। अपने देश भव्य अतीत को जान उसके प्रति गौरव भावना राष्ट्र प्रेम की विशेषता है। भारतेन्दु के नाम में ही "भारत"है और भारत के प्रति उनकी भावना अत्यंत सच्चा और दुर्भावना मुक्त है। उन्होंने उसी समय जान लिया था कि किसी भी प्रकार के बाह्य संघर्ष की अपेक्षा अंतर्मन की शुद्धता अत्यंत आवश्यक है। इसी कारण उन्होंने अपनी रचनाओं में भारत की गौरव गाथा गयी ताकि प्रत्येक नागरिक सबसे पहले अपने आपको स्वाभिमानी "भारतीय "माने। तभी वह भारत के लिए कुछ सोचेगा और कर सकेगा। इसी कारण उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से पाठकों को यह स्मरण कराने का प्रयास किया है कि हमारा अतीत कितना गौरवशाली रहा है। वे "भारत -दुर्दशा "नाटक में कहते हैं –

"भारत के भुजबल जग रच्छित ,भारत विद्या जेहि जन सिंचित।

भारत तेज जगत विस्तार ,भारत -भाव कम्पित संसार। "

यहाँ पर भारतेंदुजी ने यह बताने का प्रयास किया है कि भारत विद्या ,बुद्धि और बल में सबसे प्रखर और तेज रहा है। लेकिन हम सबमें यह हीनता ग्रंथि घर कर गयी है कि हम पिछड़े हुए हैं। जबकि सत्य तो यह है कि हमने ही सारे संसार को ज्ञान दिया। हमारे यहाँ ऐसे कई चरित्र हैं जिन्होंने अपने अस्तित्व को देश की अस्मिता से जोड़ा। तभी वे लोग अपने देश के बारे में सोच सके और उसके लिए कुछ कर सके। जिस तरह हम भजन -कीर्तन के माध्यम से भगवान् का गुणगान कर भगवद्भक्ति करते है उसी तरह से देश के गौरव गान कर अपनी देशभक्ति को तीव्रतर करें। इसके लिए सबको अपने राष्ट्र से परिचित होना आवश्यक है। देश का परिचय मतलब उसके कण -कण से वाकिफ होना। भारतेंदुजी ने अपनी कविताओं में भारत का परिचय कराया है -

"भारत अहा ! यही वही भूमि है जहाँ साक्षात्।
भगवान् श्री कृष्णचन्द्र के दूतत्व करने पर भी वीरोत्तम।
दुर्योधन ने कहा था -"सूच्यग्रं नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशवम। "

आज हम ऐसे गौरवशाली देश की दुर्दशा देख रहे हैं। सब श्मशान हो रहा है। रचनाकार को आश्चर्य होता है कि आखिर यहाँ की योग्यता ,विद्या ,सभ्यता ,उद्योग ,उदारता ,धन ,बल ,मान ,दृढ़चित्तता ,सत्य सब कहाँ गए ? यह सब इसीलिए हुआ कि हममें अपने देश के प्रति अभिमान न होने के कारण यहाँ का वैभव क्षीण होता गया। अब तो हमें जागृत होना होगा। हमें अपने देश के लिए काम करना होगा। अपने घर परिवार की भाँति इसके विकास के लिए तत्पर रहना होगा।

राष्ट्र के प्रत्येक तत्व से प्रेम करना -

राष्ट्र का मतलब कोई भौगोलिक क्षेत्र मात्र नहीं बल्कि उस सीमा के भीतर के पूरे तत्व शामिल हैं जिनसे कोई देश बनता है। इसके अंतर्गत भूमि ,आकाश ,जलवायु ,जल तत्व ,वनस्पति आदि सभी कुछ शामिल है। भारतेंदुजी ने देखा कि हमें न अपनी भाषा से प्रेम है ,न किसी तत्व से ,हमें यदि किसी से प्रेम है तो सिर्फ अपने आप से। जो व्यक्ति अपनी माता ,मातृभाषा और मातृभूमि से प्रेम नाही करता वह सच्चा मानव नहीं। इसके लिए मानव में जाग्रति की आवश्यकता है। इस जाग्रति के लिए ज्ञान ज़रूरी है। इसी जागृति की आगाज़ हमें भारतेंदुजी की कविता

"निज भाषा उन्नति अहै "में देखने को मिलती है -

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के , मिटत न हिय के शूल। ----

अंग्रेजी पढ़िकै जदपि ,सब गन होत प्रवीन।

पै निज भाषा ज्ञान बिन ,रहत हीन के हीन। "2

सच है हमारी उन्नति हमारी भाषा के प्रयोग में है। जब हम अपनी भाषा ,भूमि को नहीं चाहेंगे तो हम उसके लिए कुछ कर भी नहीं पाएंगे। मानव की सहज प्रवृत्ति है कि वह तभी किसी से प्यार कर सकता है जब उसकी स्थिति सही हो अर्थात जब देश का सही दिशा में विकास हो रहा हो। किसी भी देश की चहुमुखी विकास के लिए जनजागृति अत्यंत आवश्यक है।

इसके लिए हमें अंधविश्वासों ,कुरीतियों से बचना होगा तभी सर्वतोमुखी विकास संभव है। अप्रत्यक्ष रूप से भारतेंदुजी आम जनता में जाग्रति लाने के लिए "एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न " निबंध के माध्यम से इसी भाव तथा विचार को व्यंग्य के रूप में मुखरित करते हैं ।

इस व्यंग्य रचना में लेखक ने बड़ी सुन्दर शैली में सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों का उपहास किया है। वे बताना चाहते हैं कि यदि हम जागरूक रहे तो कोई बाहरवाला हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। आज तक हमारे आपसी झगड़ों के कारण हम सदा पिछड़े रहे और धोखा खाते रहे। इसी व्यंग्य रचना में बताते है कि भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है ? अर्थात वे बताना चाहते हैं कि यदि हम जागरूक हो तो कोई हमारे देश में घुस नहीं सकता। जैसे हम अपने घर की रक्षा करते हैं उसी प्रकार हमें जागरूक रहकर अपने देश की रक्षा करनी चाहिए। अपने देश के लिए सदा मर -मिटने को तैयार रहना चाहिए।

इस प्रकार भारतेंदुजी देश का गौरव हैं और उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारत के गौरव की रक्षा करने का सन्देश दिया। देश -प्रेम की रचनाओं के माध्यम से उन्होंने जनमानस में राष्ट्रीय भावना का बीजारोपण किया। उनका काव्य सामाजिक चेतना का काव्य है। उनका उद्भव आधुनिक काल यानि नवजागरण युग में हुआ ,जो हिंदी साहित्य का प्रवेश द्वार के समान है। उसमें भारतेन्दु युग आधुनिक हिंदी साहित्य की आधार शिला है। इस समय प्राचीन और नवीन का समन्वय देखने को मिलता है क्योंकि इस समय एक तरफ अतीत का प्रभाव था तो दूसरी तरफ नवीनता का नवोन्मेष हो रहा था। भारतेंदुजी ने अपने काव्य के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना का प्रचार किया और उत्कृष्ट नाटकों के माध्यम से जनता को जागरूक बनाने का प्रयास किया। जागरूकता ही राष्ट्रप्रेम का दूसरा चरण है। उन्होंने तत्कालीन समाज में निहित राजनीतिक विषमताओं को लेकर लिखा। बिहार के एक विवेकहीन रजवाड़े को आधार बनाकर भारतेंदुजी ने "अंधेर नगरी " की रचना की। विलासी और निरंकुश शासन व्यवस्था पर व्यंग्य किया और समाज में प्रचलित धार्मिक पाखंडों पर प्रहार किया। " एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न " में वे मूर्ख ज्योतिषियों पर व्यंग्य करते हैं -"हे लुप्तलोचन ! ज्योतिषाभरण बड़े उद्दंड पंडित हैं। ये ज्योतिष विद्या में अति कुशल हैं। कुछ नवीन तारे भी गगन में जाकर ढूंढ आये हैं और कितने ही नवीन ग्रंथों की रचना भी कर डाली है। "3 हमारे लोगों की विडम्बना यह है कि वे बुद्धि से तो कुशल है पर विचार और भावना से पिछड़े हैं। तभी हमारे समाज के विकास में सदा बाधा आती रहती है। इसी कारन हम सब भारतीयों को अपने देश के प्रति गौरव की भावना रहनी चाहिए और अपने राष्ट्र से प्रेम करना चाहिए। यही भारतेन्दु की रचनाओं का निचोड़ है। समग्र रूप से वे बस यही कहना चाहते हैं कि हम अपने अतीत के प्रति गौरव की भावना रहे ताकि हम अपने भविष्य के प्रति जागरूक रहकर देश के विकास में अपना योगदान दें। यही सच्ची देश सेवा और राष्ट्र भक्ति होगी। उनकी रचना "भारत -दुर्दशा " में वे यही सन्देश

देते हैं - " महाराज ,वेदांत ने बड़ा उपकार किया। सब हिन्दू ब्रह्म हो गए। किसी की इतिकर्तव्यता बाकि न रही। ज्ञानी बनकर ईश्वर से विमुख हो गए ,रुक्ष हो गए ,अभिमानी हुए और इसी से स्नेह शून्य हो गए। जब स्नेह ही नहीं तब देशोद्धार कहाँ ?"4

यही वो आतंक है जिससे भारतेंदुजी द्रवित हैं। उन्हें इसी बात की चिंता है कि भारत और भारतीय हर दृष्टि से समृद्ध और संपन्न होते हुए भी हमारी कमियों के कारण पिछड़े हैं। हमें हमारी चेतना को जागृत कर विकासोन्मुख होना है।

संदर्भ सूची :

1) राजेश जोशी - समकालीन भारत और शिक्षा, पृष्ठ सं 36, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

2) काव्य -सुधा - सं -विभा रानी, अमन प्रकाशन, कानपूर, पृष्ठ सं -14

3) निबंध संचयन - सं - राजेश तिवारी, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ सं -3

4) भारत -दुर्दशा - भारतेन्दु हरीश्चंद्र, पृष्ठ सं, 46

****